ग्राम-लक्ष्मी की उपासना

विनोबा भावे

आज किसान के दो ईश्वर हो गए हैं । अब तक एक ही ईश्वर था । किसान आकाश की तरफ देखता था । लेकिन आज चीजों के भाव ठहराने वाले देवता की तरफ देखना पड़ता है । इसी को आसमानी-सुलतानी कहते हैं । आसमान भी रक्षा करे और सुलतान भी हिफाजत करे । परमात्मा खूब फसल दे और शहर भरपूर भाव दे । इस तरह इन देवताओं को- एक आकाश का और दूसरा अमेरिका का-किसान को पूजना पड़ता है । लेकिन ऐसे दो-दो भगवान् काम नहीं आयेंगे आएँगे । एक ईश्वर बस है ।

अब इस दूसरे देवता की यानी शहरिए भगवान की, शक्ति से छुटकारा पाने का उपाय मैं तुम लोगों को बतलाता हूँ । हमारे गाँव की सारी लक्ष्मी यहाँ से उठकर सारे शहरों में चली जाती है । अपने पीहर से चल बसती है । इस ग्राम-लक्ष्मी के पैर गाँवों में नहीं ठहरते । वह शहर की तरफ दौड़ती है । पहाड़ पर पानी भरपूर बरसता है, लेकिन वह वहाँ कब ठहरता है । वह चारों तरफ भाग निकलता है । पहाड़ बेचारा कोरा-का-कोरा नंग-धड़ंग, गंजा-बुचा खड़ा-का-खड़ा रह जाता है । देहात की लक्ष्मी इसी तरह चारों दिशाओं में भाग खड़ी होती है । शहरों की तरफ बेतहाशा दौड़ती है । अगर हम इसे रोकें तो हमारे गाँव सुखी होंगे ।

यह देहाती लक्ष्मी किन-किन रास्तों से भागती है, सो देखो । उन रास्तों को बन्द कर दो । तब वह रहेगी । इसके भागने का पहला रास्ता बाजार है । दूसरा शादी-ब्याह, तीसरा साहूकार और चौथा व्यसन । इन चारों रास्तों को बन्द करना शुरू करें ।

सबसे पहले शादी-ब्याह की बात लीजिए । तुम लोग ब्याह-शादी में कोई कम पैसा खर्च नहीं करते । उसके लिए कर्ज भी करते हो, लड़की बड़ी हो जाती है, अपनी ससुराल में जाकर गिरस्ती करने लगती है, लेकिन शादी के ऋण से उसके माँ-बाप मुक्त नहीं होते । यह रास्ता कैसे मूँदा जाय ? समारोह खूब करो । ठाट-बाट में कमी नहीं होनी चाहिए, लेकिन मैं अपनी पद्धति से कम खर्च में पहले भी ज्यादा ठाट-बाट तुम्हें देता हूँ । लड़के-लड़की की शादी माँ-बाप करें । लेकिन वहाँ उनका काम खत्म हो जाना चाहिए । शादी करना, समारोह करना, यह सारा काम गाँव का होगा । माँ-बाप शादी में एक पाई भी खर्च नहीं करेंगे, जो करेंगे उनको जुर्माना होगा, ऐसा कायदा गाँववालों को बना लेना चाहिए। लड़के जितने अपने माँ-बाप के हैं उतने ही समाज के भी हैं । आपका कर्ज घटेगा, झगड़े कम होंगे। आत्मीयता बढ़ेगी ।

दूसरा रास्ता बाजार का है । तुम देहाती लोग कपास बोते हो, लेकिन सारा का सारा बेच देते हो । फिर बुवाई के वक्त बिनौले शहर से मोल लेते हो । कपास यहाँ पैदा करते हो । उसे बाहर बेचकर बाहर से कपड़ा खरीद लाते हो । गन्ना यहाँ पैदा करते हो । उसे बेचकर शक्कर बाहर से लाते हो । गाँव में मुंगफली, तिल्ली और अलसी होती है, लेकिन तेल शहर की तेलमील से लाते हो । अब इतना ही बाकी रह गया है कि यहाँ से अनाज भेजकर रोटियाँ बम्बई से मँगाओ । तुम्हें तो बैल भी बाहर से लाने पड़ते हैं । इस तरह सारी चीजें बाहर से लाओगे तो कैसे पार पाओगे ।

बाजार में क्यों जाना पड़ता है ? जिन चीजों की जरूरत होती है, उन्हें भरसक गाँव में ही बनाने का निश्चय करो । स्वराज्य यानी स्वदेश का राज्य, अपने गाँव का राज्य । पुराने जमाने में हमारे गाँव स्वावलम्बी थे । उन्हें सच्चा स्वराज्य प्राप्त था। इस रवैये को अपनाओ, फिर देखो, तुम्हारे गाँव कैसे कहलाते हैं । तुम कहोगे- यह महँगा पड़ेगा । यह केवल कल्पना है । मैं एक उदाहरण से समझाता हूँ ।

तेली चार आने देकर चमार से महँगा जूता खरीदता है । उसकी जेब से चार आने गए। आगे चलकर वह चमार तेली से चार आने ज्यादा देकर महँगा तेल खरीदता है । यानी उसके चार आने लौट आते हैं। जहाँ पारस्परिक व्यवहार होता है वहाँ 'महँगा' जैसा कोई शब्द नहीं है । गए हुए पैसे दूसरे रास्ते से लौट आते हैं । मैं उसकी महँगी चीज खरीदता हूँ, वह मेरी महँगी चीज खरीदता है । हिसाब बराबर । इसमें क्या बिगड़ता है ।

देहात में प्रेम होता है, भाईचारा होता है । देहात के लोग अगर एक-दूसरे की जरूरतों का ख्याल नहीं रखेंगे तो वह देहात ही नहीं है । वह तो शहर के जैसा हो जाएगा । शहर में कोई किसी को नहीं पूछता । वहाँ मक्खियों के समान आदमी भिनभिनाते रहते हैं । चींटियों की नाईं जिनका ताँता लगा रहता है वह क्या आपसी प्रेम के लिए ? शहर में स्वार्थ और लोभ है । गाँव प्रेम से बनता है ।

यथार्थ लक्ष्मी देहात में हैं । पेड़ों में फल लगते हैं, खेतों में गेहूँ होता है, गन्ना होता है । यही सब सच्ची लक्ष्मी है। यह सच्ची लक्ष्मी बेचकर तुम शहर से सस्ती चीजें लाते हो, लेकिन सभी ऐसा करने लगें तो देहात वीरान दिखाई देंगे। तुम्हारे गाँव में जो न बनती हों, उनके लिए दूसरे गाँव खोजो । तुम्हारी ग्राम-पंचायतों को यह काम अपने जिम्मे लेना चाहिए। गाँव के झगड़े-टंटे दूर करने का काम पंचायतों का ही है, लेकिन गाँव से कौन सी चीजें बाहर जाती हैं, कौन-कौन सी बाहर से आती हैं,इसका ध्यान भी पंचायतों को रखना चाहिए, नाका बनाकर फेहरिस्त बनानी चाहिए । बाद में वे चीजें बाहर से क्यों आती हैं, इसकी जाँच-पड़ताल करके उन्हें गाँव में ही बनवाने की कोशिश करनी चाहिए। फिर तुम ही चीजों के दाम ठहराओगे । जब सभी एक दूसरे की चीजें खरीदने लगेंगे तो सब सस्ता-ही-सस्ता होगा । सस्ता और महँगा ये शब्द ही नहीं रहेंगे ।

खादी गाँव में रहनी चाहिए । खादी के कपड़ों के लिए सूत के बटन भी यहीं बन सकते हैं । उन दूसरे बटनों की क्या जरूरत है ? अगर छाती पर वे बटन न हों तो क्या प्राण छटपटाएँगे ! इस कण्ठी की क्या जरूरत है ? उसके बिना चल नहीं सकता ? ऐसी अनावश्यक चीज गाँव में लाओगे तो ये कण्ठियाँ पैरों को जंजीर की तरह जकड़ेंगी या फाँसी की रस्सी की तरह गला घोंट देंगी । बाहर से ऐसी कण्ठियाँ लाकर अपने शरीर को मत सजाओ । भगवान् श्रीकृष्ण कैसे सजता था ? वह क्या बाहर से कण्ठियाँ लाता था ? वृन्दावन में मोरों के जो पंख गिर जाते थे,उन्हीं से वह अपना शरीर सजाता था । पंख उखाड़ कर नहीं लाता था । वह मोर के पंख से सजता था । मेरे गाँव के मोर हैं, उनके पंखों से मैं अपने शरीर को सजाऊँ तो इसमें उन मोरों की भी पूजा होती है । ऐसी भावना से वह मोर मुकुट लगाता था और गले में क्या पहनता ? वनमाला । मेरी यमुना के तीर के फूल–वे सबको मिलते हैं । गरीबों को मिलते हैं, अमीरों को मिलते हैं । यह स्वदेशी वनमाला, देहात की वनमाला, गले में पहनता था और बजाता क्या था ? मुरली– देहात के बाँस की बाँसुरी– वह अलगोजा । यही उसका वाद्य था ।

हमारे एक मित्र जर्मनी गए थे । वह वहाँ का एक प्रसंग सुनाते थे– ‘‘हम सब विद्यार्थी इकट्ठे हुए थे । फ्राँसीसी, जर्मन, अँग्रेज, जापानी, रूसी सब एक साथ बैठे थे । सबने अपने अपने देश के राष्ट्रीय वाद्य बजाकर दिखाए । फ्राँसीसियों ने वायोलिन बजाया, अँग्रेजों ने अपना वाद्य बजाया । मुझसे कहा गया, ‘तुम हिन्दुस्तानी वाद्य सुनाओ ।’ मैं चुपचाप बैठा रहा । वे मुझसे पूछने लगे, ‘तुम्हारा भारतीय वाद्य कौन–सा है ? मैं उन्हें बता न सका ।’’

मैंने तुरन्त अपने उस मित्र से कहा,‘‘अजी हमारा राष्ट्रीय वाद्य बाँसुरी है । लाखों गाँवों में पाई जाती है । सीधी–सादी और मीठी । कृष्ण भगवान् ने उसे पुनीत किया है । एक बाँस की नली ले ली, उसमें छेद बना लिए । बस वाद्य तैयार हो गया ।’’

ऐसा वाद्य श्रीकृष्ण बजाता था । वह गोकुल का स्वदेशी देहाती वाद्य था । अच्छा, श्रीकृष्ण खाता क्या था ? बाहर की चीनी लाकर खाता था ? वह अपने गोकुल की मक्खन-मलाई खाता था, दूसरों को खाना सिखाता था। ग्वालिनें गोकुल की यह लक्ष्मी मथुरा को ले जाती थीं परन्तु गाँव की इस अन्नपूर्णा को कन्हैया बाहर नहीं जाने देता था। वह उसे लूटकर सबको बाँट देता था । सारे गोकुल के बालक उसने हृष्ट-पुष्ट किए। जिन्होंने गोकुल पर चढ़ाई की, उनके दाँत उसने अपने मित्रों की मदद से खट्टे किए। गोकुल में रहकर भी वह क्या करता था ? गायें चराता था । उसने दावानल निगल लिया, याने क्या किया ? देहातों को जलाने वाले लड़ाई-झगड़ों का खात्मा किया, सब लड़कों को इकट्ठा किया । प्रेम बढ़ाया । इस तरह यह श्रीकृष्ण गोपाल कृष्ण है । उसने तुम्हारी गायों का वैभव बढ़ाया । गाँव की सेवा की । गाँवों पर प्रेम किया, गाँव के पशु-पक्षी, गाँव की नदी, गाँव का गोवर्धन पर्वत इन सब पर उसने प्रेम किया । गाँव ही उनका देवता रहा । आगे चलकर वे द्वारिकाधीश बने, लेकिन फिर भी गोकुल आते थे । फिर गाय चराते थे, गोबर में हाथ डालते थे, गौशाला बुहारते थे, वनमाला पहनते थे, वंशी बजाते थे, लड़कों के साथ, गोपवालों के साथ खेलते थे । 'ब्रज किशोर' उनका प्यारा नाम था, 'गोपाल' उनका प्यारा नाम था । उन्होंने गोकुल में असीम आनन्द और सुख पैदा किया ।

गोकुल का सुख असीम था। ऐसे गोकुल के अन्न के चार कणों के लिए देवता तरसते थे। प्रेममस्त गोपाल बाल जब भोजन करके दही और 'गोपाल कलेवा' खाकर यमुना के जल में हाथ धोने जाते थे, तब देवता मछली बनकर वे जूठे अन्न कण खाते थे। उनके स्वर्ग में वह प्रेम कहाँ था ? उन देवताओं को पैसे की कमी नहीं थी, लेकिन उनके पास प्रेम नहीं था। हमारे शहर आपके स्वर्ग हैं न ? अरे भाई, वहाँ प्रेम नहीं है ।

वहाँ भोग है, परन्तु आनन्द नहीं है । अपने गाँवों को गोकुल के समान बनाओ, तब वे शहर के नगर सेठ तुम्हारे गाँव की नमक-रोटी के लिए लालायित होकर दौड़ते आएँगे । हमें देहातों को हरा-भरा गोकुल बनाना है- स्वाश्रयी, स्वावलम्बी, आरोग्य-सम्पन्न; उद्योगशील, प्रेमशील । ईख का कोल्हू है, चरखा चल रहा है, धुनियाँ धुन रहा है, तेल का कोल्हु चूँ-चर्र बोल रहा है, कुएँ पर मोठ चल रही है । चमार जूता बना रहा है, गोपाल गायें चरा रहा है और वंशी बजा रहा है, ऐसा गाँव बनने दो । अपनी गलती से हमने गाँवों को मरघट बनाया । आइए, फिर इसे गोकुल बनाएँ ।

कागज एरंडौल का खरीदो । दन्तमंजन राख को बनाओ । ब्रुश दाँतौन के बनाओ । विदेशी कागज की झंडियाँ और पताकाएँ हमें नहीं चाहिए । अपने गाँवों के पेडों के पल्लव, ग्राम-पल्लव लो । उनके तोरण और वन्दनवार बनाओ । गाँवों के पेड़ों का अपमान क्यों करते हो ? बाहर से चीजें लाकर वन्दनवार लगाओगे तो गाँवों के दरख्त रूठेंगे । वे समारोह में हाथ बटाना चाहते हैं, उनकी कोंपलें लाओ ।

हमारे धार्मिक मंगल उत्सवों के लिए क्या कागज के तोरण विहित हैं ? आम के शुभ पल्लव चाहिए और घड़ा चाहिए । कलश चाहिए सो क्या टिनपाट का होगा ? वह पवित्र कलश मिट्टी का ही चाहिए। देखो हमारे पूर्वजों ने गाँव की चीजों की कैसी महिमा बढ़ाई है । उस दृष्टि को अपनाओ । सारा नूर पलट जाएगा । इधर-उधर दूसरी ही दुनिया दिखाई देने लगेगी । समृद्धि और आनन्द के दर्शन होने लगेंगे ।

कोई दिन-भर फू-फू बीड़ी फूँकते हैं, बीड़ियाँ तो घर की हैं । वे बाहर से नहीं आतीं, अरे भाई, जहर अगर घर का हो तो क्या खा लोगे ? घर का जहर खाकर पूरी सोलह आने स्वदेशी मृत्यु को स्वीकार करोगे ? जहर चाहे घर का हो या बाहर का, त्याज्य ही है । उसी तरह सभी व्यसन बुरे हैं । उन सबको छोड़ना चाहिए । वे प्राणघातक हैं । शराब पीकर आखिर हम क्या साधते हैं ? प्राणों का, कुटुम्ब का, धन का और इन सबसे प्रिय धर्म का - सभी चीजों का नाश होता है ।

बीड़ी और शराब के बाद तीसरा व्यसन है बात-बात में तकरार करना । कृष्ण ने झगड़ों का दावानल निगल लिया । तकरार मत करो और अगर झगड़ा हो जाए, तो गाँव के चार भले आदमी बैठकर उसका तस्फिया करो । अदालत की शरण न लो । अदालतें तुम्हारे गाँवों में ही होनी चाहिए । जिस प्रकार और चीजें गाँवों की ही हों, उसी प्रकार न्याय भी गाँव का ही हो । तुम्हारे खेतों में सब कुछ पैदा होता है । अगर न्याय तुम्हारे गाँव में न पैदा हो तो कैसे काम चलेगा ? गाँव का धान्य हो, गाँव का वस्त्र हो और गाँव का ही न्याय हो । बाहर की कचहरी, अदालतें किस काम की ? चीजों के लिए जिस तरह हम परावलम्बी न होंगे, उसी तरह न्याय के लिए भी नहीं होंगे। प्रेम से रहेंगे। दूसरे को थोड़ा-बहुत अधिक मिल जाए, तो भी वह गाँव में ही रहेगा, लेकिन दूर चले जाने पर न हमें मिलेगा, न तुम्हें ही मिलेगा। सारा भाड़ में जाएगा । गाँव के ही पंचों में परमेश्वर हैं। उसी की शरण लो ।

अन्तिम बात साहूकार की है । धीरे धीरे साहूकारों से दूर रहने की कोशिश करनी चाहिए, परन्तु कर्ज चुकाने के फेर में बाल-बच्चों की उपेक्षा न करो । बच्चों को दूध-घी दो । भरपूर भोजन दो । लड़के समाज के हैं । बच्चे जितने मेरे पास हैं, उतने साहूकार के भी हैं । वे सारे देश के हैं । लड़कों को न देकर तुम साहूकार को ही देते हो । इसलिए पहले पेट भर खाओ ।

बाल-बच्चों को खिलाओ, घर की जरूरतें पूरी होने पर कुछ बकाया रहे, तो जाकर दे दो । कर्ज तो देना ही है । भोग-विलास के बाद नहीं ।

पहले दूसरे कई राज्य हुए तो देहात का यह वास्तविक स्वराज्य कभी नष्ट नहीं हुआ । इसलिए हमें रोटियों के लाले नहीं पड़े, परन्तु यह खादी का स्वराज्य, देहाती उद्योग-धन्धों का स्वराज्य नष्ट हो गया है । इसलिए देहात वीरान और डरावने दिखाई देने लगे ।

शब्द-अर्थ

लक्ष्मी - धन, वैभव; पीहर- मायका; बेतहाशा- अंधाधूंध; व्यसन- शौक, आदत, गिरस्ती- गृहस्थी, जुर्माना- अर्थदण्ड, बिनौले- बीज, स्वावलम्बी- आत्म निर्भर, वीरान-सूनसान, फेहरिस्त- सूची, नाका- मुहाना, चौकी, अलगोजा- बाँसुरी, दावानल- जंगल की आग, स्वाश्रयी- आत्मनिर्भर, उद्योगशील-प्रयत्नशील, तस्फिया-फैसला ।

अनुशीलनी

भावबोध और विचार :

(क) मौखिक :-

(i) ग्राम-लक्ष्मी के रूप में गाँव में क्या-क्या मिलते हैं- बताइए ।

(ii) ग्राम-लक्ष्मी किन किन रास्तों से भाग जाती है ?

(ख) लिखित :-

(i) लेखक ने ग्राम - लक्ष्मी का कैसा वर्णन किया है, उसे अपने शब्दों में लिखिए ।

(ii) इस निबंध में लेखक ने ग्राम-लक्ष्मी की कैसी उपासना करने को कहा है ?

(iii) लेखक के अनुसार यथार्थ लक्ष्मी क्या है ?

(iv) ग्राम-लक्ष्मी के भागने के चार रास्ते कौन कौन से हैं ?

(v) भगवान् कृष्ण किन किन चीजों से सजते थे ?

(vi) गोकुल में श्रीकृष्ण क्या क्या करते थे ?

(vii) गाँव की पंचायत क्या काम करती है ?

अनुभव विस्तार :-

(i) आप अपने गाँव में घूमकर देखिए कि गाँव में क्या-क्या होता है ?

(ii) अपने दैनन्दिन जीवन में आप गाँव की क्या-क्या चीजें इस्तेमाल करते हैं, एक-एक करके कक्षा में बताइए ।

(iii) गाँव के किसी शादी ब्याह में जाकर देखिए कि उसमें कैसे-कैसे खर्चे होते हैं ।

भाषाबोध : -

(i) निम्नलिखित पंक्तियों को पूरा कीजिए :

(क) आज किसान के .... हो गए हैं ।

(ख) .... इसी तरह चारों दिशाओं में भाग खड़ी होती है ।

(ग) लड़के जितने अपने माँ-बाप के हैं उतने ही .... के भी हैं ।

(घ) स्वराज्य यानी .... का राज्य, अपने .... का राज्य ।

(ङ) देहात में प्रेम होता है, ... होता है ।

(च) .... लक्ष्मी देहात में हैं ।

(छ) इस तरह यह श्रीकृष्ण .... कृष्ण हैं ।

(ज) हमारे पूर्वजों ने गाँव की चीजों की .... है ।

(झ) कृष्ण ने झगड़ों का .... निगल लिया

(ञ) गाँव का .... हो, गाँव का .... हो, और गाँव का ही .... हो ।

(ii) **इस पाठ के आधार पर पाँच विदेशी शब्दों को चुनकर लिखिए :**

जैसे : हिफाजत, सुलतानी, बेतहाशा

(iii) **सर्वनाम-संज्ञा के स्थान पर जो शब्द प्रयुक्त होता है उसे सर्वनाम कहते हैं ।**

जैसे – यह, वह, उसने, हम, कोई, कुछ आदि ।

(iv) **निम्नलिखित वाक्यों से सर्वनाम के पद छाँटिए :**

(क) इस तरह इन देवताओं को एक आकाश का और दूसरा अमेरिका का-किसान को पूजना पड़ता है ।

(ख) यह देहाती लक्ष्मी किन-किन रास्तों से भागती है, सो देखो ।

(ग) इन चारों रास्तों को बन्द करना शुरू करें ।

(घ) उसकी जेब से चार आने गए ।

(ङ) यही सब सच्ची लक्ष्मी है।

(च) अपनी गलती से हमने गाँवों को मरघट बनाया।

(छ) वह पवित्र कलश मिट्टी का ही चाहिए ।

(v) **इन शब्दों के विभिन्न खण्डों को विच्छेद करके लिखिए :**

जैसे : परमात्मा = परम + आत्मा

स्वराज्य =

स्वदेश =

स्वावलम्बी =

सम्पन्न =

उद्योगशील =

व्यसन =

वन्दनवार =

प्राणघातक =

परावलम्ब =

(vi) निम्नलिखित वाक्यों में क्रिया पदों के काल बताइए :

(क) वह शहर की तरफ दौड़ती है ।

(ख) वह चारों तरफ से भाग निकलता है ।

(ग) तेली चार आने देकर चमार से महँगा जूता खरीदता है ।

(घ) ऐसा वाद्य श्रीकृष्ण बजाता था ।

(ङ) वह गायें चराता था ।

(च) लड़कों के साथ, गोपवालों के साथ खेलते थे ।

(छ) ईख का कोल्हू है, चरखा चल रहा है, धुनियाँ धुन रहा है, तेल का कोल्हू चूँ-चर्र बोल रहा है ।

(vii) निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए :

लक्ष्मी -

रास्ता -

समारोह-

प्रेम -

श्रीकृष्ण -

मुकुट -

(viii) लिंग - कोई शब्द पुरुष जाति का है या स्त्री जाति का, यह जिससे जाना जाए, वह लिंग है ।

हिन्दी में लिंग दो प्रकार के हैं-

(क) पुंलिंग

(ख) स्त्रीलिंग

i) निम्नलिखित स्त्रीलिंग शब्दों के पुंलिंग रूप लिखिए :

हथिनी, देवरानी, शिष्या, बालिका, सास

ii) निम्नलिखित पुंलिंग शब्दों के त्रीलिंग रूप लिखिए :

श्रीमान, धोबी, बेटा, सेवक, साँप

iii) निम्नलिखित शब्दों का लिंग निर्णय करके उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए:

रोटी, पानी, पेट, सूर्य, आँख ।